1

नव-फ्रायडवादी उपागम
NEO-FREUDISM-APPROACH

B.A-II-(H)
PAPER-IV

फ्रायड का अनुसरण करते हुए बाद में कई सिद्धान्तकारों ने अपने विचार प्रतिपादित किए। प्रारम्भ में कुछ सिद्धान्तकारों ने फ्रायड के साथ मिलकर काम किया, परन्तु आगे चलकर उन्होंने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त की अपनी व्याख्या प्रस्तुत की। इन सिद्धान्तकारों को नव-विश्लेषणवादी अथवा पश्च-फ्रायडवादी कहा गया, जिससे की इन्हें फ्रायड से अलग समझा जा सके। इन सिद्धान्तों की विशेषता यह है कि इनमें इड की लैंगिक और आक्रामक प्रवृत्तियों की भूमिकाओं और अहं संप्रत्यय के विस्तार को कम महत्व दिया गया है। इनके स्थान पर सर्जनात्मकता, क्षमता और समस्या निवारण योग्यता जैसे मानवीय गुणों पर प्रकाश डाला गया है। इनमें से कुछ सिद्धान्तों का वर्णन करना आवश्यक है।

कैरेन हार्नी :— आशावाद :—

हार्नी, फ्रायड की एक अन्य अनुयायी थे जिन्होंने फ्रायड के आधारभूत सिद्धांतों से अलग एक सिद्धान्त विकसित किये। उन्होंने मानव संवृद्धि एंव आत्मसिद्धि पर प्रकाश डालते हुए मानव जीवन के एक आशावादी दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया। हार्नी का प्रमुख योगदान इस बात में है कि उन्होंने फ्रायड के इस विचार को नकारा है कि महिलाएँ हीन होती है, उनके अनुसार महिलाओं तथा पुरुषों में विशेष गुण होते हैं।

जिसकी प्रशंसा विपरीत लिंग के व्यक्तियों को करनी चाहिए और किसी भी लिंग के व्यक्तियों को हीन अथवा श्रेष्ठ नहीं समझा जाना चाहिए। प्रतिरोधात्मक रूप में उनका विचार यह था कि महिलाएँ जैविक कारकों की तुलना में सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों से अधिक प्रभावित होती हैं। उन्होंने इस तर्क को प्रस्तुत किया कि मनोवैज्ञानिक विकार बाल्यावस्था की अवधि में विक्षुब्ध अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों के कारण उत्पन्न होता है। यदि माता-पिता का व्यवहार बच्चे के प्रति उदासीन, हतोत्साहित करनेवाला है तो बच्चे के मन में असुरक्षा की भावना जाग्रत हो जाती है जिसे मूल दुश्चिंता कहते हैं।

कार्ल युंग :- उद्देश्य एवं इच्छाएँ :-

प्रारम्भ में युंग ने फ्रायड के साथ मिलकर काम किया परंतु बाद में फ्रायड से अलग हो गए। युंग के अनुसार मानव काम-भावना एवं आक्रामकता के स्थान पर उद्देश्यों और आकांक्षाओं से अधिक निर्देशित होते हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व के एक सिद्धान्त को विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान कहते हैं। इन सिद्धान्तों के अनुसार व्यक्ति के व्यक्तित्व में प्रतिस्पर्धी शक्तियाँ एवं संरचनाएँ कार्य करती हैं न कि व्यक्ति तथा समाज की माँगों अथवा वास्तविकता के बीच कोई द्वन्द्व होता है। युंग के अनुसार यह एक प्रकार का सामूहिक अचेतन होता है जिसमें

आद्य प्रारूप अथवा आद्य प्रतिमाएँ होती हैं। वे व्यक्तिगत स्तर पर अर्जित नहीं की जाती हैं, बल्कि वंशागत होती हैं। आद्य प्रारूप मिथकों, स्वप्नों एंव मानव जाति की सभी कलाओं में पाए जाते हैं। युंग के अनुसार, एकत्व एंव सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति को उत्तरोत्तर अपने सामूहिक एंव व्यक्तिगत अचेतन में उपलब्ध ज्ञान हेतु जागरूक होने के साथ ही साथ संगत भाव से रहना सीखना चाहिए।

एरिक फ्रॉम :- मानवीय महत्व :—

फ्रॉम ने अपने सिद्धान्तों को सामाजिक उन्मुखता के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसे दूसरे लोगों से उसके संबंध के आधार पर समझा जा सकता है। उनका तर्क है कि संवृद्धि और क्षमताओं की उपलब्धि जैसे मनोवैज्ञानिक गुण, स्वतंत्रता की इच्छा एंव न्याय तथा सत्य के लिए संघर्ष के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं। फ्रॉम ने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए कोमलता एंव प्रेम जैसे विध्यात्मक गुणों को महत्व दिया है।

Next day

Hrishi Kesh lal
Deptt – Psychology,
B.M.C. Rahika